|| अर्हम् ||

जैन परम्परा का महान पर्व है—पर्युषण अथवा सम्वत्सरी वह मैत्री भाव से जुड़ा हुआ पर्व है इस अवसर पर एक दूसरे से क्षमा का आदान—प्रदान किया जाता है। वर्ष भर में किसी के साथ कोई कटु व्यवहार हो गया हो, उसको इस अवसर पर साफ कर लिया जाए। यह इस पर्व का सन्देष है।

राग द्वेष के भाव के कारण मनुष्य में बैर भाव पैदा होता है, उसे क्रोध भी आ जाता है। मनुष्य से भूल हो सकती है। परन्तु उसका परिष्कार करने का प्रयास करना चाहिए। अनुकम्पा की चेतना आदमी में जाग जाए तो वह मैत्री भाव से भावित चिन्त वाला बन सकता है। अनुकम्पा से तात्पर्य है—दया का भाव, किसी को दुःख न देने का संकल्प और दूसरों के कल्याण की भावना।

हमारे सामने संवम्सरी पर्व आ रहा है। उसके संदर्भ में हम सभी मनुष्यों से, सभी प्राणियों से खमत खामना करते हैं। हमारे द्वारा कोई कटु व्यवहार किसी के साथ हुआ हो तो वे हमें क्षमा करें हमारी मंगल कामना है—दुनियां में अनुकम्पा की भावना प्रसारित हो और दुनिया अहिंसा, मैत्री और कल्यान के पथ पर आग्रसर हो।

सरदारशहर

आचार्य महाश्रमण